RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

CLASS 12th | HISTORY

ARJUN BATCH

विचारक विश्वास और इमारतें

Chapter-4 | Part-4



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?

1. थेरीगाथा
2. भिक्षुओं और भिक्खुनियों के लिए नियम
3. स्तूप कैसे बनाएं गए
4. स्तूप की संरचना

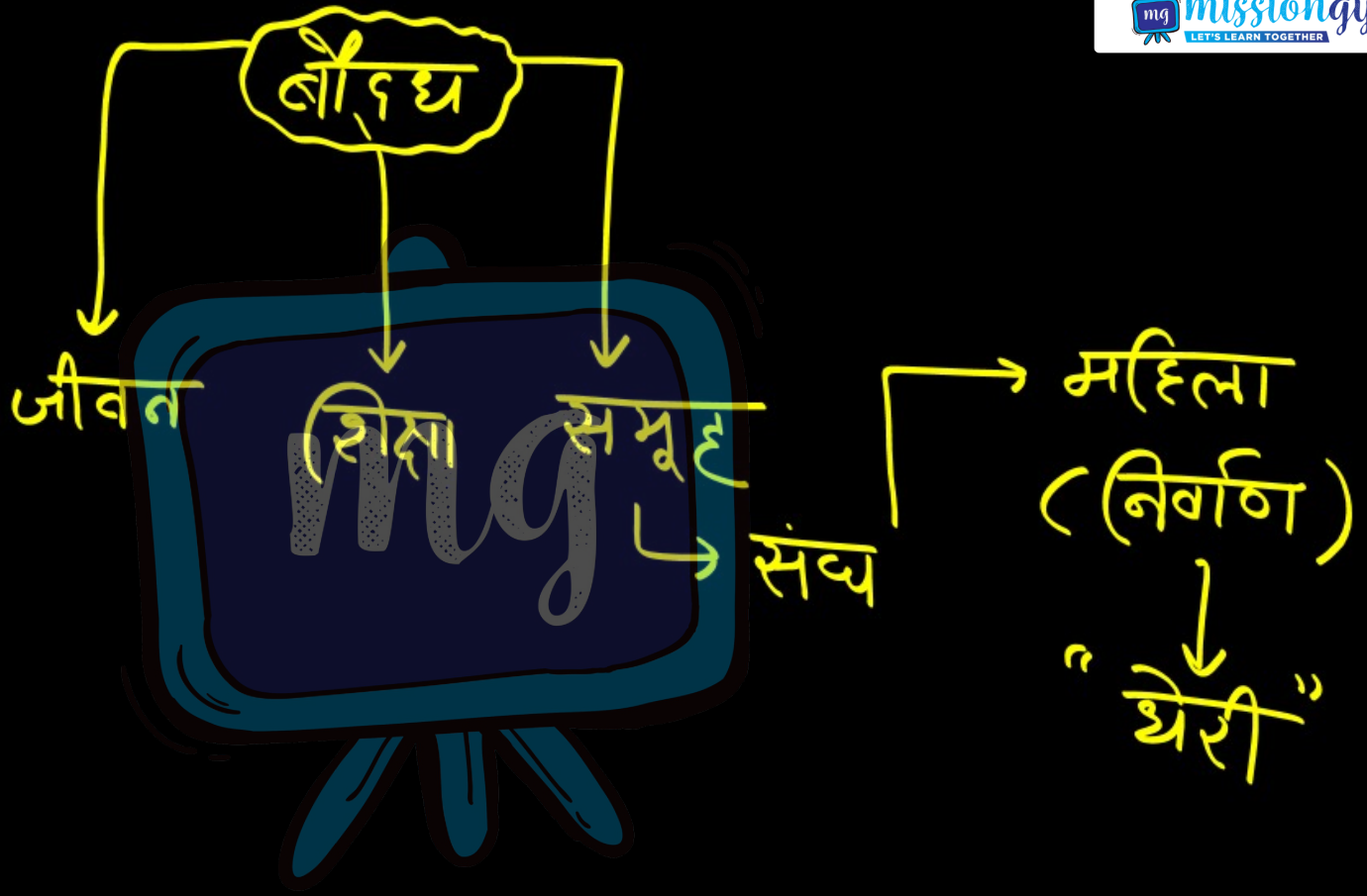
बौद्ध
जीवन
शिक्षा
समूह
संघ
महिला
(निर्वाण)
"थेरी"

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

थेरीगाथा



यह अनूठा बौद्ध ग्रंथ सुत्त पिटक का हिस्सा है। इसमें भिक्खुनियों द्वारा रचित छंदों का संकलन किया गया है। इससे महिलाओं के सामाजिक और आध्यात्मिक अनुभवों के बारे में अंतर्दृष्टि मिलती है।

पुन्ना नाम की एक दासी अपने मालिक के घर के लिए प्रतिदिन सुबह नदी का पानी लाने जाती थी। वहाँ वह हर दिन एक ब्राह्मण को स्नान कर्म करते हुए देखती थी। एक दिन उसने ब्राह्मण से बात की। निम्नलिखित पद्य की रचना पुन्ना ने की थी जिसमें ब्राह्मण से उसकी बातचीत का वर्णन है :

मैं जल ले जाने वाली हूँ :
कितनी भी ठंड हो
मुझे पानी में उतरना ही है

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सज़ा के डर से
या ऊँचे घरानों की स्त्रियों के कटु वाक्यों के डर से।
हे ब्राह्मण तुम्हें किसका डर है,
जिससे तुम जल में उतरते हो
ब्राह्मण बोले :
मैं बुराई को रोकने के लिए अच्छाई कर रहा हूँ
बूढ़ा या बच्चा
जिसने भी कुछ बुरा किया हो
जल में स्नान करके मुक्त हो जाता है।
पुन्ना ने कहा :
यह किसने कहा है कि पानी में नहाने से बुराई से
मुक्ति मिलती है?...

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



वैसा हो तो सारे मेंढक और कछुए स्वर्ग जाएँगे
साथ में पानी के साँप और मगरमच्छ भी!
इसके बदले में वे कर्म न करें
जिनका डर
आपको पानी की ओर खींचता है।
हे ब्राह्मण, अब तो रुक जाओ!
अपने शरीर को ठंड से बचाओ...

(जल ले जाने वाली एक स्त्री, लगभग तीसरी शताब्दी ई.)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



१. थेरी ?
२. थेरीगाथा ?
३. पुत्ता (थेरीगाया) ?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

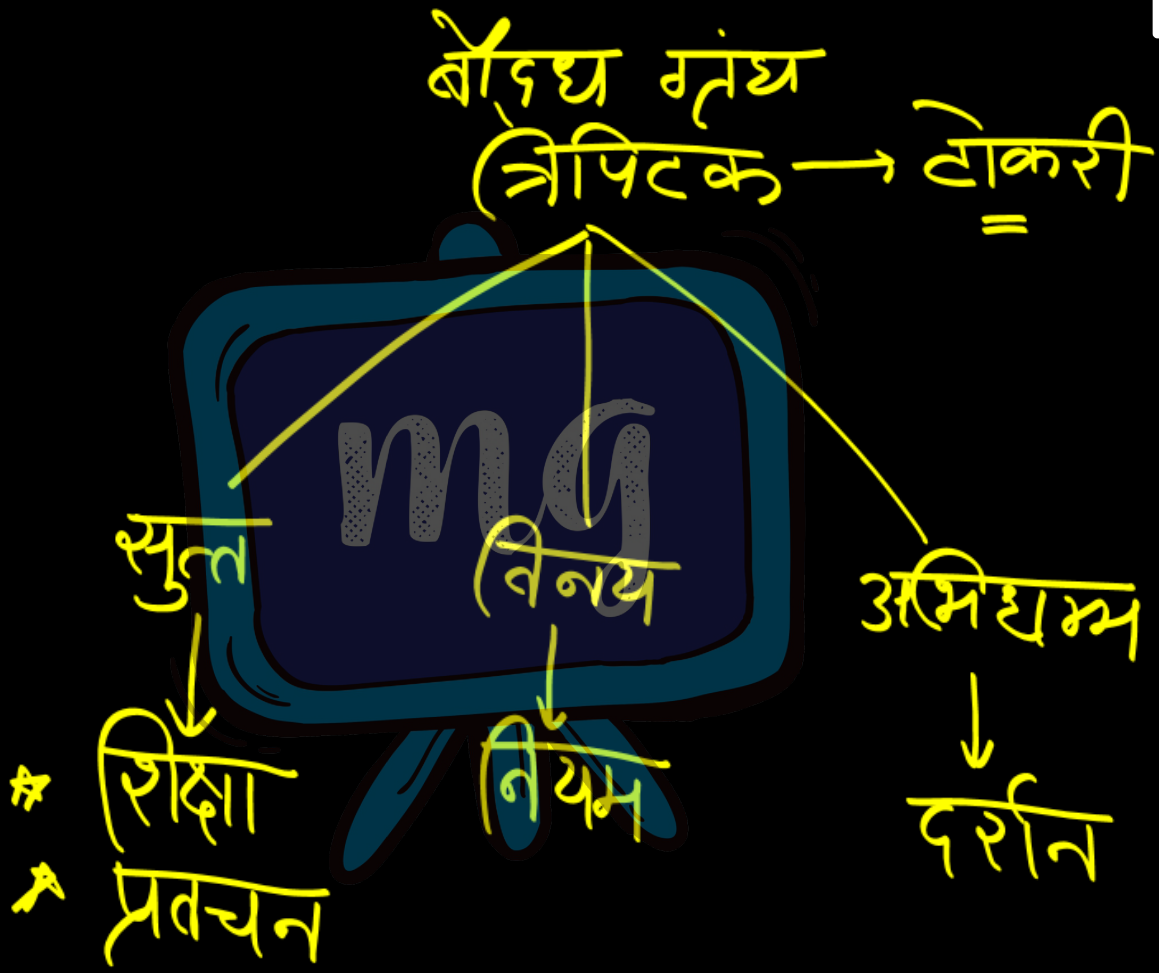

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

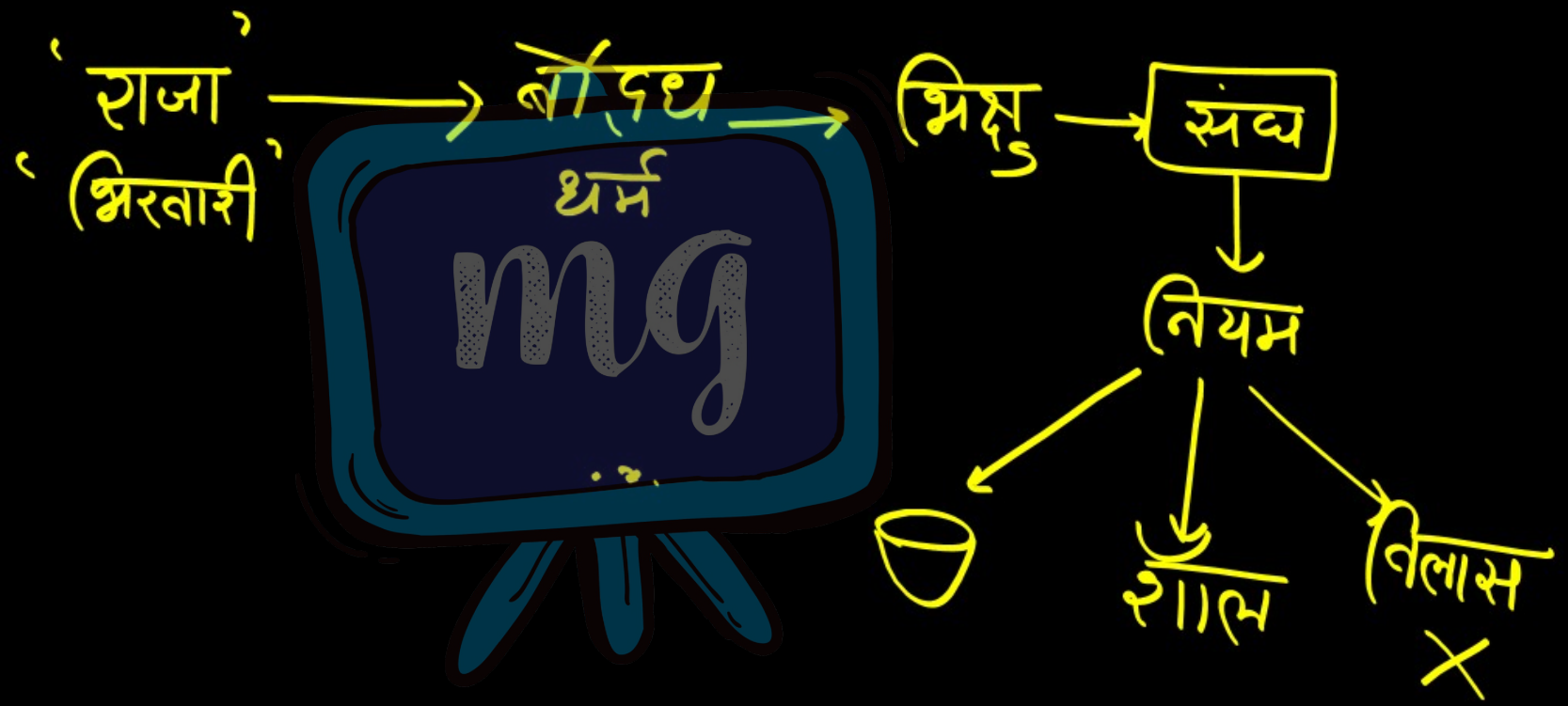

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भिक्षुओं और भिक्खुनियों के लिए नियम



ये नियम विनय पिटक में मिलते हैं :

- जब कोई भिक्खु एक नया कंबल या गलीचा बनवाएगा तो उसे इसका प्रयोग कम से कम छः वर्षों तक करना पड़ेगा। यदि छः वर्ष से कम अवधि में वह बिना भिक्खुओं की अनुमति के एक नया कंबल या गलीचा बनवाता है तो चाहे उसने अपने पुराने कंबल/गलीचे को छोड दिया हो या नहीं – नया कंबल या गलीचा उससे ले लिया जाएगा और इसके लिए उसे अपराध स्वीकरण करना होगा।
- यदि कोई भिक्खु किसी गृहस्थ के घर जाता है और उसे टिकिया या पके अनाज का भोजन दिया जाता है तो यदि उसे इच्छा हो तो वह 2–3 कटोरे भर ही स्वीकार कर सकता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

यदि वह इससे ज्यादा स्वीकार करता है तो उसे अपना 'अपराध' स्वीकार करना होगा। 2-3 कटोरे पकवान स्वीकार करने के बाद उसे इन्हें अन्य भिक्खुओं के साथ बाँटना होगा। यही सम्यक आचरण है।

☞ यदि कोई भिक्खु जो संघ के किसी विहार में ठहरा हुआ है, प्रस्थान से पहले अपने द्वारा बिछाए गए या बिछवाए गए बिस्तरे को न ही समेटता है, न ही समेटवाता है, या यदि वह बिना विदाई लिए चला जाता है तो उसे अपराध स्वीकरण करना होगा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- बुद्ध के जीवनकाल में और उनकी मृत्यु के बाद भी बौद्ध धर्म तेज़ी से फैला। क्योंकि लोग समकालीन धार्मिक प्रथाओं से असंतुष्ट थे और उस युग में तेज़ी से हो रहे सामाजिक बदलावों से भी वे उलझनों में थे।
- बौद्ध शिक्षाओं में जन्म के आधार पर श्रेष्ठता की बजाय जिस तरह अच्छे आचरण और मूल्यों को महत्त्व दिया गया जिससे महिलाएँ और पुरुष इस धर्म की तरफ़ आकर्षित हुए।
- स्वयं से छोटे और कमज़ोर लोगों की तरफ़ मित्रता और करुणा के भाव को महत्त्व देने के आदर्श काफ़ी लोगों को भाए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. बौद्ध नियमों को समझने के लिए हम कौन ग्रंथ पढ़ सकते हैं? कुछ नियमों को उदाहरण सहित बताइए?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

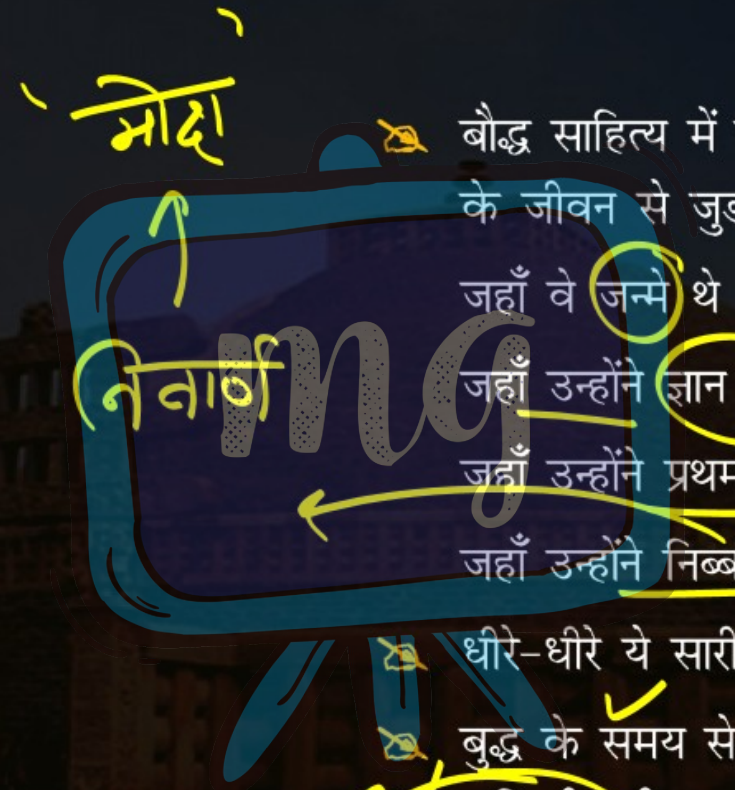

- बौद्ध साहित्य में कई चैत्यों की चर्चा है। इसमें बुद्ध के जीवन से जुड़ी जगहों का भी वर्णन है–
  - जहाँ वे जन्मे थे – लुम्बिनी
  - जहाँ उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया – बोधगया
  - जहाँ उन्होंने प्रथम उपदेश दिया – सारनाथ
  - जहाँ उन्होंने निब्बान प्राप्त किया – कुशीनगर।
- धीरे-धीरे ये सारी जगहें पवित्र स्थल बन गईं।
- बुद्ध के समय से लगभग 200 वर्षों बाद असोक ने लुम्बिनी की अपनी यात्रा की याद में एक स्तंभ बनवाया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

'स्तूप'

क्या?

- ✓ अवशेष
- \+
- ✓ महत्वपूर्ण वस्तु

पवित्र स्थल

किसके?

- राजा - अशोक
- व्यापारी - 'श्रेणी'
- सामान्य - समूह

क्यो?

- धर्म
- सामाजिक प्रतिष्ठा।

कैसे

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



स्तूप कैसे बनाए गए

- स्तूपों की वेदिकाओं और स्तंभों पर मिले अभिलेखों से इन्हें बनाने और सजाने के लिए दिए गए दान का पता चलता है।
- कुछ दान राजाओं के द्वारा दिए गए थे (जैसे सातवाहन वंश के राजा),
- कुछ दान शिल्पकारों और व्यापारियों की श्रेणियों द्वारा दिए गए।

जैसे – साँची के एक तोरणद्वार का हिस्सा हाथी दाँत का काम करने वाले शिल्पकारों के दान से बनाया गया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- सैकड़ों महिलाओं और पुरुषों ने दान के अभिलेखों में अपना नाम, कईयों ने अपने गाँव या शहर का नाम, कईयों ने अपना पेशा और रिश्तेदारों के नाम भी लिखवायें हैं।
- इन इमारतों को बनाने में भिक्खुओं और भिक्खुनियों ने भी दान दिया।

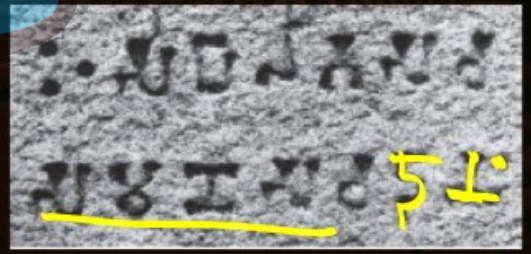

सांची का दानात्मक अभिलेख
ऐसे सैकड़ों अभिलेख भरहुत तथा अमरावती में भी मिले हैं।

Q. स्तूपों का निर्माण किनके द्वारा किया जाता था?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

स्तूप की संरचना

- स्तूप (संस्कृत अर्थ टीला) का जन्म एक गोलार्द्ध लिए हुए मिटी के टीले से हुआ जिसे बाद में अंड कहा गया।
- धीरे-धीरे इसकी संरचना ज़्यादा जटिल हो गई क्योंकि इसमें कई चौकोर और गोल आकारों का संतुलन बनाया गया।

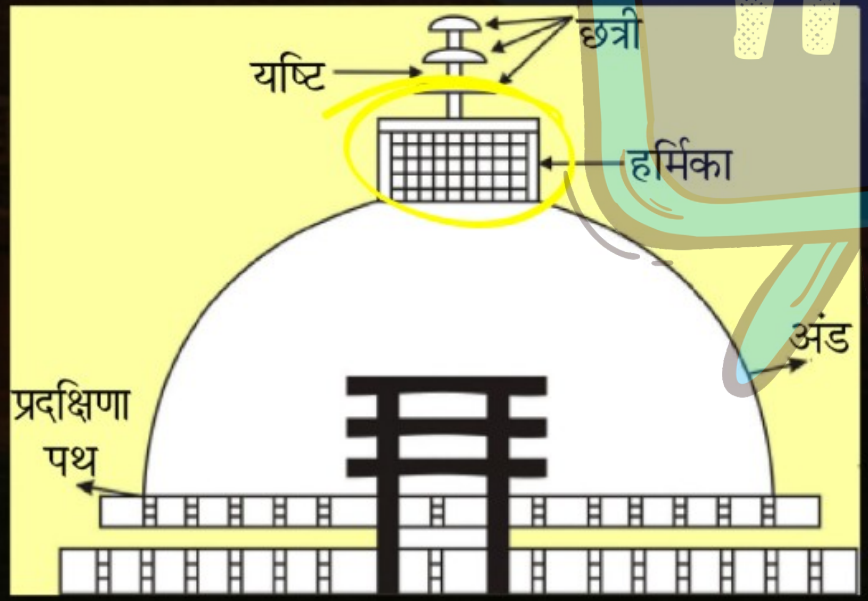

- अंड के ऊपर एक हर्मिका होती थी। यह छज्जे जैसा ढाँचा देवताओं के घर का प्रतीक था।
- हर्मिका से एक मस्तूल निकलता था जिसे यष्टि कहते थे जिस पर अक्सर एक या अधिक छत्री लगी होती थी।
- टीले के चारों ओर एक वेदिका होती थी जो पवित्र स्थल को सामान्य दुनिया से अलग करती थी।

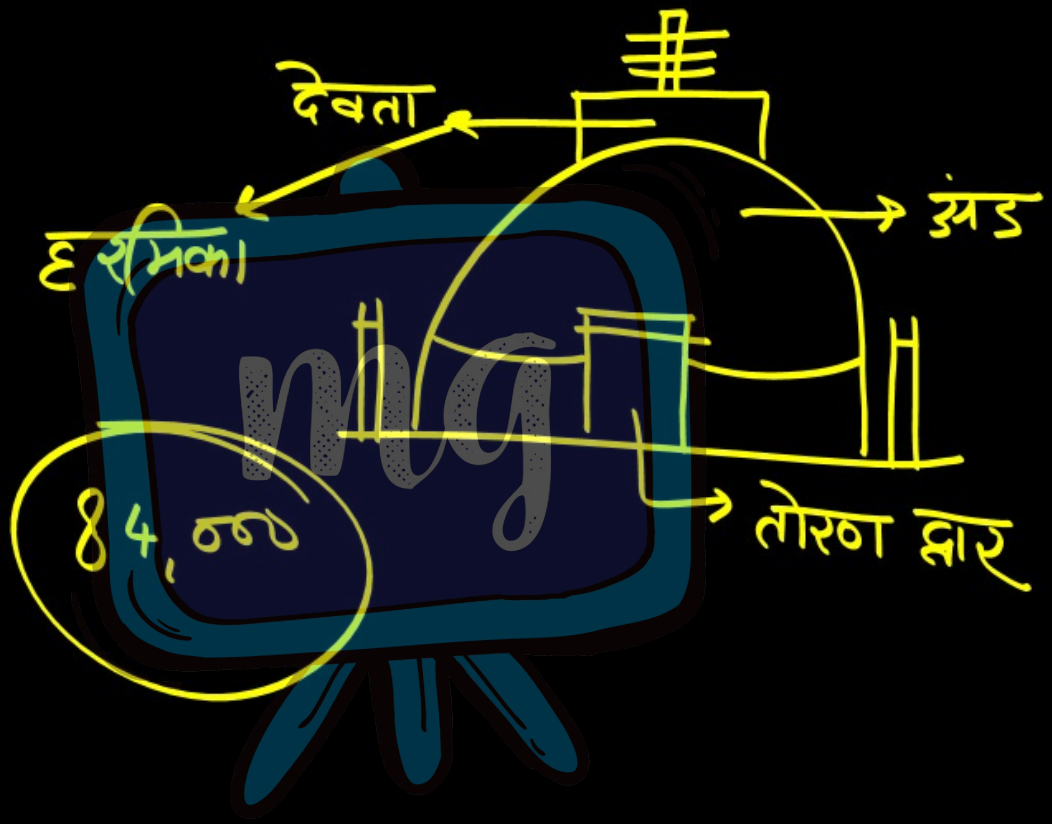
देवता
इंडे
हस्तिका
84,000
तोरण द्वार

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



साँची और भरहुत के प्रारंभिक स्तूप :-

- ये स्तूप बिना अलंकरण के हैं सिवाए इसके कि इनके चारों ओर पत्थर की वेदिकाऐं और तोरणद्वार है।
- ये पत्थर की वेदिकाएँ किसी बाँस के या काठ के घेरे के समान थीं।
- चारों दिशाओं में खड़े तोरणद्वार पर खूब नक्काशी की गई थी।
- उपासक पूर्वी तोरणद्वार से प्रवेश करके टीले को दाईं तरफ़ रखते हुए दक्षिणावर्त परिक्रमा करते थे, मानो वे आकाश में सूर्य के पथ का अनुकरण कर रहे हों।
- बाद में स्तूप के टीले पर भी अलंकरण और नक्काशी की जाने लगी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

